Dr. Dhananjay Kumar Singh

Assistant Professor

S. R. A. P College

रामकृष्ण मिशन

स्वामी विवेकानन्द

- जीवन परिचय
  किनकी विचारधारा से प्रभावित।-
- उनके गुरु के बारे में, उनका उनके जीवन में क्या प्रभाव
- विश्व धर्म सम्मेलन में भाग लिया
- रामकृष्ण मिशन की स्थापना
- उनकी प्रसिद्ध पुस्तक।-
- उनकी विचारधारा
- उनके प्रसिद्ध कथन।-
- प्रसिद्ध उपाधि :-
- प्रसिद्ध विद्वान जिन्होंने विवेकानन्द के बारे में कुछ कहे :-

- जीवन परिचय !-
  जन्म – 12 जन 1863 (उनके जन्म दिन पर युवा दिवस मनाया जाता)
- बचपन का नाम !- नरेन्द्र नाथ दत्त
- पिता : विश्वनाथ दत्त
- माता ! भुवनेश्वरी देवी
- भाई ! भुपेन्द्र नाथ दत्त.

Date __/__/__
Page ____

शिक्षा । प्रेसीडेंसी कॉलेज से दर्शन
शास्त्र से स्नातक (अंग्रेजी मे)

NOTE!- 1817 में राजा राममोहन राय ने और
डेविड हेयर ने जिस हिंदु कॉलेज की स्थापना
किए थे उसी का नाम बदलकर प्रेसीडेंसी
university कर दिया

- जब वे प्रेसीडेंसी कॉलेज मे पढ़ रहे थे तब
वे ब्रह्म समाज के सम्पर्क मे आए थे.
तब उनकी विचारधारा विशेष रूप से प्रभावित
नही कर पाई

- मृत्यु ! 4 July 1902 (कलकत्ता मे समाधि लेकर
अपने शरीर का त्याग कर दिए
लगभग 40 वर्ष की उम्र मे)

- चार्ल्स डार्विन, अगस्त कॉम्टे, कांट और डेविड ह्यूम
की विचारधारा से विशेष रूप से प्रभावित ।

·उनके गुरु एवं उनके जीवन ~~पर~~ विवेकानन्द का प्रभाव

- उनके गुरु का नाम रामकृष्ण परमहंस था
(1836-86)

- उनके बचपन का नाम गदाधर चट्टोपाध्याय था
23 वर्ष की आयु मे शारदामाणि से उनका
विवाह ~~से~~ हुआ जो 5 वर्ष की थी।

- ये काली के पुजारी थे और साक्षात दर्शन करवा देते थे, इन्होंने शारदामणि में काली के रूप देखे और उन्हें अपना शिष्य बना लिए।
- हिन्दू, ईसाई, इस्लाम धर्म के विशेष जानकार।
- दमदम सैन्य छावनी के सिख धर्म के व्यक्तियों से परिचित हुए।
- आध्यात्मिक क्षेत्र में इनकी विशेष रुचि।
- इनका मानना था मानव सेवा सबसे बड़ा धर्म है
- इनके बारे में रोमिया रौला लिखते हैं यदि यह व्यक्ति यूरोप में होता तो इनकी बड़ी दुर्गति होती और इनको मानसिक रोगी घोषित कर किसी पागल खाने में भेज दिया जाता।
- महेन्द्रनाथ गुप्त ने रामकृष्ण के विचारों को संकलित किए थे।
- 1881 में नरेन्द्र नाथ दत्त की रामकृष्ण से भेंट हुई, दोनों की विचारधारा अलग थे, नरेन्द्र नाथ अंग्रेजी शिक्षा से जानकार थे ईश्वर में कोई आस्था नहीं, वे सभी से यही पूछते थे कि क्या आपने ईश्वर को देखा। जब रामकृष्ण परमहंस से इन्होंने ये प्रश्न किए तो यह बताए कि मुझे तो दिखाई दे रहा क्या आपको दिखाई नहीं दे रहा क्योंकि आपकी दृष्टि वहाँ तक नहीं पहुँच पा रही है, इन्हीं विचारों से प्रभावित होकर इन्हें गुरु का लिए और इनसे आध्यात्मिक शिक्षा प्राप्त किए

उनकी मृत्यु के बाद नरेन्द्र नाथ दत्त तथा अन्य शिष्यों के द्वारा विचारधारा / ज्ञान को पूरे भारत में फैलाने का काम शुरू किया गया। इसी क्रम जब नरेन्द्र नाथ दत्त राजस्थान के झुंझुनू जिला के खेतड़ी स्थान में थे तब वहाँ के राजा कुंवर अजीत सिंह ने इन्हें काफी आर्थिक मदद किया और उन्होंने सुझाव दिया कि आप अपना नाम विवेकानंद रख लीजिए और यह आग्रह किया कि शिकागो में आयोजित होने वाले विश्व धर्म सम्मेलन का आप प्रतिनिधित्व कीजिए। उनके ही सुझाव और पर शिकागो गए थे।

• विश्व धर्म सम्मेलन में भाग लेना।—

⇒ 1893 में जब वे विश्व धर्म सम्मेलन में भाग लेने शिकागो पहुंचे तब उनके कपड़े को देखकर काफी मजाक उड़ाया गया उन्होंने जवाब दिए आपके यहाँ व्यक्तित्व की पहचान पोशाक से होती है जो दर्जी रचित है और यहाँ व्यक्तित्व की पहचान संस्कार से होती है जो गुरु, वे परिवार के वातावरण से होता।

— शिकागो में उन्होंने जो प्रवचन दिए और उससे उनको विश्व प्रसिद्धि मिली

→ अमेरिका के भाषणों और व्याख्यानों से प्रवचन की शुरुआत किया।

1906 — इस विश्व धर्म सम्मेलन में महिला आर्य समाज की प्रतिनिधि पंडिता रमाबाई, थियोसोफिकल सोसाइटी की तरफ से एनी बेसेंट और नागरकर, ब्रह्म समाज के प्रताप चंद्र मजूमदार भी उपस्थित थे।

— विश्व धर्म सम्मेलन के बाद उनके व्यक्तित्व के बारे में न्यूयॉर्क के पेपर द हेराल्ड ने लिखा " इस समय जितने भी धर्म प्रतिनिधि गण लोग आए थे उनमें विवेकानन्द सबसे विशिष्ट थे। भारत जैसे धरती के जहाँ से ये व्यक्तित्व आए हैं वहाँ अन्य धर्म प्रचारकों को सद्भाव, प्रेम, विश्व बन्धुत्व की भावना सीखाने के लिए जाना मूर्खतापूर्ण कार्य होगा।

— शिकागो विश्व धर्म सम्मेलन में प्रसिद्धि मिलने के बाद तुरंत ही दो अमेरिकी व्यक्ति उनके शिष्य बन गए।

(i) स्वामी अभयानंद
(ii) स्वामी कृपानंद } — अमेरिका

1896 में वेदान्त सोसाइटी की स्थापना किए न्यूयॉर्क में

· 1896 में शांति आश्रम की स्थापना किए कैलीफोर्निया में।